सर्वेश्वर श्रीसीतारामाभ्यां नमः

बोधायनवृत्तिकारमहर्षिश्रीपुरुषोत्तमाचार्यबोधायननिर्मितं

सप्तकाण्डार्थसप्तकम्

कुर्वे शुकं मुनिं नत्वा वाल्मिकीं चाथ राघवम् ।
रामायणार्थबोधाय सप्तकाण्डार्थसप्तकम् ॥१॥

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्याय नमोनमः

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्यप्रणीत

प्रकाश

सीतानाथसमारम्भां शुकबोधायनान्विताम् ।
रामानन्दार्यसंयुक्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

श्रीसम्प्रदाय के ९वें आचार्य महर्षि श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी बोधायन (वि. पू.५६९-३२०) प्रणीत सप्तकाण्डार्थ सप्तक श्रीबोधायनगीता का एकदेशरूप श्रीमद्रामायण के काण्डों का संक्षिप्त रहस्य बोधक लघु दिव्य प्रबन्ध है जिसके स्वाध्याय से श्रीमद्रामायण तत्त्व का बोध साधकों को अनायास हो जाता है। संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ साधकों के हितार्थ अति संक्षिप्त हिन्दी में प्रकाश डाला जा रहा है-

परमहंस शिरोमणि मेरे श्रीगुरुदेव मुनीश्वर श्रीशुकदेवाचार्यजी श्रीमद्रामायण महाप्रबन्ध जो सर्वेश्वर श्रीरामजी के तात्विक स्वरूप का बोधक एवं सर्वजन हितकारक है के

रामस्य सर्वशक्तेश्च सर्वज्ञस्यावतारिणः ।
बालकाण्डेन सम्प्रोक्ता जगतः सृष्टिहेतुता ॥२॥
रामस्य पादुकादातुर्भरताय महात्मने ।
अयोध्याकाण्डतः प्रोक्ता जगतः स्थितिहेतुता ॥३॥
रामस्य स्वप्रपन्नानां मुनीनां रक्षकस्य हि ।
अरण्यकाण्डतः प्रोक्ता भक्तानां मोक्षदातृता ॥४॥

प्रणेता महर्षि श्रीवाल्मीकि ब्रह्मर्षिजी तथा दिव्य प्रबन्धाधिनायक सर्वावतारी श्रीराघवजी को यथाविधि साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करके श्रीमद्रामायण के तात्विक अर्थ के बोध हेतु सप्तकाण्डार्थ सप्तक नामक लघु दिव्य प्रबन्ध को बनाता हूँ ॥१॥

श्रीमद्रामायणीय बालकाण्ड के द्वारा सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ एवं सर्वावतारी-सभी अवतारों के कारण भूत सर्वेश्वर श्रीरामजी को जगत-संसार का कारण रूपसे अच्छी प्रकार से निरूपण किया गया है ॥२॥

श्रीमद्रामायण के अयोध्या काण्ड से महात्मा श्रीभरतजी को अपनी श्रीचरणपादुका प्रदान करने वाले सर्वेश श्रीरामचन्द्रजी को संसार के स्थिति-स्थिरता के कारण रूपमें निरूपण किया गया है ॥३॥

स्व-अपने प्रपन्न-शरण में आये मुनियों के नियत रूपसे रक्षा करनेवाले एवं स्वशरणागत भक्तों को सायुज्य

कपिमित्रस्य रामस्य गृध्रादेर्मोक्षदायिनः ।
किष्किन्धाकाण्डतः प्रोक्ता दोषहीनगुणाब्धिता ॥५॥
ब्रह्मणो जानकीशस्य हनुमद्वर्णितस्य हि ।
सुन्दरकाण्डतः प्रोक्ता जगत्संहारहेतुता ॥६॥
ब्रह्मादिस्तुतरामस्य दशकन्धविनाशिनः ।
बुद्धकाण्डेन सम्प्रोक्ता सर्ववेदान्तवेद्यता ॥७॥

मुक्ति प्रदान करनेवाले सर्वेश श्रीरामजी का दिव्य स्वरूप अरण्य काण्ड से वर्णित हुआ है ॥४॥

गृध्रराज जटायु एवं शवरी प्रभृति को सायुज्य मुक्ति प्रदान करनेवाले तथा कपिराज सुग्रीवजी के मित्र सर्वेश श्रीरामजी के दिव्य चरित के वर्णन परक श्रीमद्रामायण के किष्किन्धाकाण्ड से भगवान् श्रीरामचन्द्रजी में सभी प्रकार के दोष हीनपना एवं सर्व प्रकार के गुणों के समुद्रपना का वर्णन हुआ है यानी श्रीमद्रामायण के किष्किन्धाकाण्ड से सर्वेश्वर श्रीरामजी में सर्वहीनदोष राहित्य एवं सर्व मंगल गुणाब्धित्व का अनुसन्धान करना चाहिये ॥५॥

जगज्जननी श्रीजानकीजी के प्राणेश्वर श्रीहनुमानजी से यथार्थ रूपसे परतत्वतया वर्णित परब्रह्म श्रीरामजी को जगत् के संहार रूपसे सुन्दरकाण्ड के द्वारा कहा गया है ॥६॥

दशकन्धर के संहारक ब्रह्माजी से दिव्य आर्षस्तव से संस्तुत तथा इन्द्र वरुण शंकर प्रभृति देवों से विविध प्रकार से प्रार्थित सर्वेश्वर श्रीरामजी को सर्ववेदान्तों के

सद्धर्मरक्षितुश्चाथ विष्णुत्वमुपजिग्मुषः ।

उत्तकाण्डतश्चोक्ता रामस्य परतत्त्वता ॥८॥

बोधायनमहर्षि श्रीपुरुषोत्तमनिर्मितम् ।

रहस्यबोधकं भूयात् सप्तकाण्डार्थसप्तकम् ॥९॥

द्वारा वेद्य-जाने जानेवाले हैं ऐसा युद्धकाण्ड से सुन्दर प्रकार से वर्णन हुआ है ॥७॥

अपने संकल्प से सृष्ट संसार के भरण-पोषण हेतु विष्णु भगवान् के अवतार को धारण करनेवाले यों "**सर्वेषामवताराणामवतारीरघूत्तमः**" इस आगम वचन के प्रमाण से सभी अवतारों के अवतारी सर्वेश्वर श्रीरामजी ही हैं अन्य नहीं। सनातन वैदिक धर्म के संरक्षक परेश श्रीरामचन्द्रजी का परतत्त्व रूपसे-परात्पर परब्रह्म रूप से श्रीमद्रामायण के उत्तरकाण्ड के द्वारा विशेष रूप से वर्णन हुआ है ॥८॥

महर्षि श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी बोधायन से निर्मित सह सप्तकाण्डार्थ सप्तक नामक प्रबन्ध श्रीमद्द्रामायण के रहस्यों का बोधक हो ॥९॥

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्यप्रणीत

प्रकाश

卐 श्रीरामः शरणं मम 卐